Deg-2
HIST (Hons) P-III

(4)

खलीफा से संबन्ध, सुल्तान, मन्त्री

खलीफा से सम्बन्ध :- 12वी शताब्दी में ऐसा समझा जाता था कि समस्त संसार में केवल एक मुस्लिम राज्य है और खलीफा उसका शासक, साथ ही वह धार्मिक नेता भी था। भारतीय गुलाम शासकों ने खलीफा की सर्वोच्चता नाममात्र के लिए स्वीकार की और स्वतंत्र रूप से शासन करते रहे। उन्होंने सिक्कों और खुतबे पर खलीफा नाम खुदवाया। यह प्रथा 1258 ई० के बाद भी चलती रही। इल्तुतमिश दिल्ली का प्रथम तुर्की सुल्तान था जिसने खलीफा से सुल्तान के कपड़े और खलप स्वीकार किए। उसने बगदाद के खलीफा का नाम अपने सिक्कों पर खुदवाया। सैद्धांतिक रूप से सभी सुल्तानों ने स्वयं को खलीफा का नायब घोषित किया।

सुल्तान :- व्यवहार में तुर्की सुल्तान निरंकुश थे और सभी अधिकार उन्हीं के हाथों में केन्द्रित थे। उसकी शक्ति असीमित थी। वह उलेमाओं की सलाह सुनने के लिए बाध्य था। सुल्तान की शक्ति —

P.T.O.

उसकी सैन्य शक्ति पर निर्भर करती थी। इसलिए वह उसे हमेशा मजबूत बनाने का प्रयास करता था। बलबन के अतिरिक्त गुलाम वंश के सभी सुल्तानों ने उलेमाओं की सलाह पर काम किया।

मंत्री —— सुल्तान के चार प्रमुख मंत्री थे वजीर, आरिज ए-मामालिक, दीवान ए-इंशा और दीवान ए-रिसालत। वजीर का कार्य प्रधानमंत्री की भाँति था। राजस्व और वित्त विभाग के अतिरिक्त उसका कार्य अन्य मन्त्रियों का नेतृत्व करना और सेना का नेतृत्व करना भी था। उसकी सहायता के लिए एक नायब होता था। इसके अधीन मुशरिफ-ए-मामालिक और मुस्तौफी ए-मामालिक कार्य करते थे। दूसरा मंत्री दीवान-ए-मामालिक सैन्य विभाग का मंत्री था। दीवान ए-इंशा का कार्य राजदरबार का पत्र व्यवहार करना था। चौथे मंत्री दीवान ए-रिसालत का कार्य विदेश सम्बन्ध स्थापित करना और नियंत्रण करना था। इनके अतिरिक्त वरीद ए-मामालिक और काजी मामालिक प्रमुख मंत्री थे। बाद के काजी मामालिक को सद्र ए-जहान कहा गया। इनके अतिरिक्त अनेक अधिकारी थे जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

Scanned with CamScanner